

# पारंपरिक जल स्रोतों के निर्माण एवं प्रबंधन का समुदाय आधारित तकनीकी ज्ञान

## तालाब निर्माण व प्रबंधन के तकनीकी पहलू :

थार का रेगिस्तान पानी के मामले में स्वावलंबी रहा है और इसका श्रेय जाता है यहां के समुदाय को। गांधीवादी विचारक, पर्यावरणविद् एवं लेखक अनुपम मिश्र ने अपनी पुस्तक में ठीक ही लिखा है कि मरूधरा में पारंपरिक जल स्रोत अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए।

यह सैकड़ों सालों का अनुभव, ज्ञान और एकजुटता से किए गये श्रम से संभव हुआ है। मिट्टी और पानी के रिश्ते की पहचान का प्रयोग साल दर साल होता गया और विविध प्रकार के जल स्रोत प्रकट होते गये। थार के सभी तालाबों को एक स्थान पर जोड़ा जाए तो एक अल्प महासागर का आकार ले सकते हैं।

उन्नति विकास शिक्षण संगठन द्वारा जोधपुर जिले की बाप तहसील में की गयी सहभागी शामलात शोध यात्रा में तालाबों एवं अन्य प्रकार के जलस्रोतों के निर्माण के लोक विज्ञान को समझना भी एक उद्देश्य था। तालाब के निर्माण और प्रबंधन का लोक विज्ञान समुदाय के बताए अनुसार इस प्रकार से रहा-

गांव की बसावट ऐसे स्थान पर की जाती थी, जहां पर पानी की व्यवस्था हो। इसमें दो प्रकार की संभावना देखते थे। पीने योग्य भू-जल की उपलब्धता अथवा सतही पानी को सहेजने की संभावना। कुआं खोदते, पानी को चखते, पीने योग्य नहीं होता, तो बरसात के पानी को सहेजने के लिए तालाब के स्थान को तलाशते।

ऊंचाई वाले क्षेत्र में जाते और पानी के बहाव को देखते। पानी कितने वेग से किस दिशा में कहां जाकर एकत्रित होता है और जमीन पर कितने दिन टिके रहता है, इसकी परख करते।

बरसों के बहाव के कारण जिस स्थान पर पानी एकत्रित होता था, बारीक कण वाली मिट्टी की परत बन जाती थी जो पानी को पाताल में जाने से रोकती थी। उस स्थान पर खुदाई कर तालाब बनाते। मिट्टी के जानकार ध्यान रखते थे कि चिकनी मिट्टी की परत पूरी तरह से टूटे नहीं। खुदाई से निकली मिट्टी की पाल बनाते थे।

कुआं खोदते-खोदते मिट्टी के रंग से उसके पानी को रोकने या नहीं रोकने की पहचान हो गयी थी। ऐसे स्थानों पर भी तालाब बनाए गये जहां नीचे पक्की चट्टान, कले, जिप्सम, मुल्टानी, चिकनी मुरम, बारीक कण वाली चिकनी मिट्टी की परत होती थी। पानी को रोक सकने वाली मिट्टी कितनी गहराई पर है, इससे तालाबों की गहराई तय होती थी। यही कारण है कि तालाबों की गहराई 10 से 60 फुट तक है।

अखाधना गांव में महिलाओं ने बताया कि जिस स्थान पर उनका तालाब बना है, वहां गाय के खुर ( चलने पैर के निशान वाले गड्डे ) में बरसात होने के बाद भी पानी 4-5 दिन तक रूका रहा तब गांव के लोगों ने अंदाजा लगा लिया कि यहाँ पानी रोका जा सकता है।

कल्याण सिंह की सिद्ध में लोगों ने बताया कि तालाब के लिए उस स्थान का चयन करते थे, जहां की मिट्टी प्यासी नहीं हो। बरसात के समय ढलान वाले क्षेत्र में कई जगहों पर गड्डे खोदते थे। बरसात होने पर वह भर जाते थे। उसके बाद देखते थे कि कौनसे गड्डे में पानी अधिक दिन रूका रहा। उस स्थान का चयन तालाब के लिए करते थे।

ढलान व पानी के बहाव वाला क्षेत्र आगौर या पायतन कहलाता है। पानी को घेर कर तालाब में लाने के लिए आगौर के किनारों पर मिट्टी के बंधे बनाते थे, जिसे आड कहा जाता है।

पाल तालाब के अंदर से निकाली गयी मिट्टी से बनाई जाती थी। किसी भी तालाब के बाहर से मिट्टी खोद कर पाल नहीं बनाई जाती। जितना गहरा लंबा चौड़ा तालाब उतनी ऊंची पाल बनती थी। पाल चंद्राकार में बनाते थे और तालाब गोलाई में। सारी मिट्टी पाल पर डालते थे, इससे पाल की मोटाई और मजबूती तय हो जाती थी।

तालाब को गोलाई में व तिरछी ढलान में खुदाई करते थे जिसे स्थानीय भाषा में तासली आकार कहते हैं। खुदाई की दीवार सीधी रखने से पानी के बहाव से कटने का डर रहता था। तिरछी ढलान वाली खुदाई में हवा के हिलारों से किनारे नहीं कटे और पानी का दबाव झेल पाये, इस लिए खुदाई टैपर में करते थे।

जिन तालाबों की दीवारों पक्की करने की योजना होती थी, उन्हीं तालाबों की खुदाई सीधी करते थे और सीढ़ी के आकार में गहराई तक जाते थे।

तालाब का स्थान ढलान समाप्त होने से थोड़ा ऊपर रखते थे, ताकि अधिक भराव होने पर निकासी हो सके। स्थानीय भाषा में इसे नेस्टा कहते हैं। निकासी द्वारा पाल की आधी ऊंचाई के बराबर रखते थे, ताकि पाल नहीं टूटे।

जैसे की मेघराजसर तालाब, जैतडासर तालाब, कान सिंह की सिद्ध, कल्याणसिंह की सिद्ध आदि के एक ही आगौर में अनेक नाडियां बनी हुई हैं। यहां लोगों ने बताया कि अधिक ढलान वाले क्षेत्र में अनेक नाडियां पानी के वेग को कम करने तथा आगौर का पानी अलग-अलग स्थानों पर एकत्रित करने के लिए बनाई गयी है। यह वाटरशेड एप्रोच ( टॉप से डाउन स्ट्रीम में पानी को रोकने का प्रबंधन ) का लोक विज्ञान है।

## मरम्मत, पानी की शुद्धता एवं उपयोग के नियम:

तालाब, नाडे की खुदाई के समय ध्यान रखते हैं कि पानी को रोकने वाली मिट्टी की परत नहीं टूटे। गांव के कुछ जानकार लोगों को इसकी परख है। घटोर में मिट्टी खुदाई का काम चल रहा था। लोगों ने बताया कि बहाव से आई रेत को निकालेंगे। नीचे की परत को नहीं तोड़ेंगे। उन्होंने बताया कि मिट्टी के रंग से पहचान करते हैं।

खुदाई स्लोप में होनी चाहिए। मिट्टी भी निकालते हैं, तब भी स्लोप का ध्यान रखते हैं।

आगौर में गंदगी नहीं करना, पशुओं की चराई नहीं करना, जहां पशुओं की चराई की छूट है, वहां व्यक्ति रखकर गोबर, मींगणी एकत्रित करने की व्यवस्था थी और कुछ स्थानों पर आज भी है।

आगौर में पानी की रूकावट नहीं हो, इसके लिए आगौर से मिट्टी खोदना, गड्डे करने की सख्त मनाही थी, कुछ स्थानों पर इसकी पालना देखी गयी।

पाल पर पशुओं का चढ़ना मना है। पशुओं के पैरों से मिट्टी टूटती है और हवा से कटाव बढ़ता है। पाल से मिट्टी खोदना मना है।

मिट्टी खाद कर पाल या आड पर ही डालते हैं। जहां पाल का कटाव होता है, उसे भरते हैं।

बरसात के समय लोग पाल पर आते हैं और अधिक बरसात होने पर सुरक्षा का ध्यान रखते हैं, निकासी द्वारा को देखते हैं, उसमें रूकावट आई है, तो दूर करते हैं। रूकावट में बाधा उत्पन्न होने से कुछ स्थानों पर बाढ़ व पानी भराव का खतरा होता है। कुछ तालाबों में पानी मापने के लिए पत्थर के स्तंभ भी लगे हैं। स्तंभ पर पानी चढ़ता है तो नेस्टा खोलने की तैयारी करते हैं।

सड़कों, पाइप लाइनों व अन्य निर्माण व खनन कार्यों में ध्यान नहीं रखते हैं तो आगौर खराब हो सकता है। कुछ स्थानों पर गांव के लोगों ने इसे अपनी चूक के रूप में स्वीकारा। आगौर में अवरोध बनने से आवक कम हो गयी।

विलायती बबूल व बिपनी जैसी घास पानी को खराब करती है। इस लिए तालाब की पाल या आगौर में खंजड़ी, जाल बड़, पीपल के अतिरिक्त दूसरे पेड़ों की कटाई करनी चाहिए। कुछ तालाबों में नियमित कटाई नहीं होने के कारण तालाब का पानी पीने लायक नहीं रहा।

कान सिंह की सिद्ध के तालाब का पानी उपयोग में नहीं लेते। पानी में घास व काई जमी हुई थी। लोगों ने बताया कि पानी नियमित काम में नहीं लेने से तालाब के पानी की गुणवत्ता खराब होती है।

बाप के अखेराज खत्री ने बताया कि नहर का पानी डालने से तालाब में हरे रंग की काई का जाल बन जाता है तथा उसे हर साल साफ कराना पड़ता है। पहले कई सालों तक पानी पड़ा रहने पर भी काई नहीं जमती थी।

गाड़ना तालाब में पानी के किनारे एक प्रकार की घास जमी हुई थी। यह घास स्थानीय नहीं थी। गांव के लोगों ने बताया कि नहर के पानी की पाइप लाइन लीकेंज होने के कारण नहर का पानी तालाब में आया तो साथ में इस घास के बीज आ गये। यह पानी को खराब करता है। इस घास को पशु भी नहीं खाते।



EUROPEAN UNION  
Financial Support

